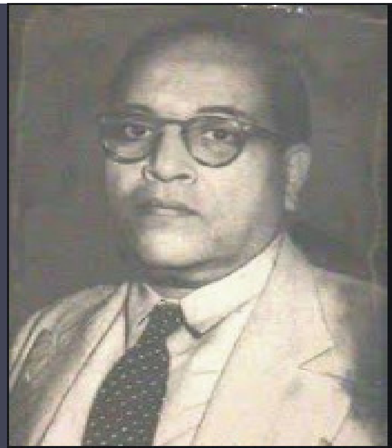

Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

जीवन परिचय

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म मध्य प्रदेश के इन्दौर जिले के महू नामक गाँव में 14 अप्रैल, 1891 में हुआ था। डॉ. अम्बेडकर के पिता का नाम रामजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। **अम्बेडकर महार जाति से सम्बन्धित थे।** महार मूलतः महाराश्ट्र की एक प्रमुख जाति है जो अछूत जाति से सम्बन्धित है। डॉ. अम्बेडकर के **बचपन का नाम भीम सकपाल था।** डॉ. अम्बेडकर की प्रारम्भिक शिक्षा महाराश्ट्र के सतारा जिले के माके प्राथमिक विद्यालय से प्रारम्भ हुई तत्पश्चात् वे पिता के साथ बम्बई आ गए एवं बम्बई में ही इनका ऐलिफिंस्टन हाईस्कूल में नामांकन/दाखिला कराया गया जहाँ से **अम्बेडकर ने 1907 में हाईस्कूल की परीक्षा पास की,** उन दिनों महार जाति के एक बालक के लिए मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करना बहुत बड़ी उपलब्धि थी। **वे सन् 1912 बम्बई के एलिफिंस्टन कॉलेज** से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक परीक्षा पास करने के बाद अम्बेडकर ने बड़ौदा राज्य की सेना में लैफ्टिनेंट के पद पर नौकरी करने लगे लेकिन उनके पिता गम्भीर रूप से बीमार हो गए जिसके कारण वे **नौकरी छोड़कर 1913 में बम्बई आ गए।**

इसके उच्चशिक्षा के लिए बड़ौदा के **महाराजा गायकवाड़ द्वारा छात्रवृति** देना स्वीकार कर लिया। बड़ौदा के महाराजा स्वयं भी मानवतावादी एवं प्रगृतिशील विचार के व्यक्ति थे एवं अपने राज्य में सामाजिक समानता लाने के लिए अनेक प्रयत्न किये थे। उन्होंने अपने राज्य में दलितों की दशा में सुधार के लिए अनेक प्रत्यन्न किये। उन्हीं के द्वारा दी गई **छात्रवृति की सहायता से सन् 1913 ई. पू. में डॉ. अम्बेडकर अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया** और सन् 1915 ई. पू. कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। **1916 में अम्बेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।** इस उपाधि को लेने के बाद 1916 में वे लंदन चले गए। जहाँ उन्होंने कानून की पढ़ाई की। 1921 में अम्बेडकर ने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रवेश लिया और कार्यशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र का अध्ययन किया। यहाँ से अम्बेडकर ने मास्टर ऑफ साइंस और पीएच.डी. की उपाधि ली इनके **पीएच.डी. का विशय ''द प्राब्लम ऑफ रूपी'' था।** यह उपाधि उन्हें लंदन विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई साथ ही उन्होंने यहाँ से 'बार एट लॉ' भी किया। डॉ. अम्बेडकर ने सन् 1920 में दलितों की समस्याओं के प्रति लोगों का ध्यान आकृर्शित करने के लिए **'मूक नायक' नामक एक समाचार पत्र का सम्पादन/प्रकाशन प्रारम्भ किया।** डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को शिंक्षत करने के लिए **'बहिस्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की।** बहिस्कृत हितकारिणी सभा के नेतृत्व मे कई स्कूल खोले गए जिसमें दलितों को शिक्षा दी गई।

पद्धतिशास्त्र

डॉ. अम्बेडकर ने अपने पद्धतिशास्त्र में **दलितों से सम्बन्धित** तथ्य/आँकड़े एकत्रित करने के लिए व्यक्तिगत अध्ययन/एकल अध्ययन का उपयोग करते हैं। **व्यक्तिक अध्ययन** एक **व्यक्ति, एक संस्था, एक परिवार, एक समुदाय, एक घटना, एक व्यवस्था या एक सम्पूर्ण संस्कृति हो सकता है।** व्यक्तिगत अध्ययन तथ्य संकलन की एक प्रविधि होने की अपेक्षा अध्ययन विश्लेशण का एक उपागम है। एक शोध–प्रकल्प, या एक व्यूह रचना है जो अध्ययन के किसी एक इकाई को उसकी समग्रता में अध्ययन करने पर बल देता है। डॉ. **अम्बेडकर अपने अध्ययन में 1937 और 1947 के चुनावों का अध्ययन करते हैं।** इन चुनावों में अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों का अध्ययन करते हैं और अपने अध्ययन को मूल बिन्दू तक पहुँचाने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया हैं। डॉ. अम्बेडकर का ऐसा भी अध्ययन है जिसमें **उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों एवं पुरातत्वशास्त्र का उपयोग किया है।** डॉ. अम्बेडकर ने अपने अध्ययन **'हू वॉज द शुद्राज'** में प्राचीन ग्रन्थ **ऋग्वेद तथा मनुस्मृति का उपयोग किया जो कुछ विशिश्ट सैद्धान्तिक आधारों का परीक्षण था।**

डॉ. अम्बेडकर का भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार

वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर के विचार

- डॉ. अम्बेडकर का मानना है कि **वर्ण व्यवस्था के लिए मुख्य रूप से प्राचीन भारतीय ग्रन्थ ऋग्वेद और मनुस्मृति जिम्मेदार है।** इसके अनुसार चार वर्णो की उत्पत्ति ऋग्वेद के 10 वें मंडल के पुरूश ुक्त में वर्णित है पुरूशशुक्त के अनुसार

ऊँ ब्राह्मणोडस्थ मुखमासीद् बाहू राजन्य कृतः।

ऊरूतदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शुदों अजायतः।।

अर्थात उस महान पुरूश के मुख से ब्राह्मण और शुजाओं से क्षत्रिय उत्पन्न हुए और दोनों जंघाओं से वैश्य एवं पैर से शुद्र प्रकट हुए।

ऋग्वेद के अनुसार यह व्यवस्था कर्म पर आधारित थी जिसमें ब्राह्मण को पूजापाठ करना क्षत्रियों को राजकाज, वैश्य को आर्थिक गतिविधि एवं शूद्रों को उपरोक्त तीनों वर्णों की सेवा करना बताया बताया गया है। यह वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी। जन्म पर नहीं **डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिन्दू समाज का वर्तमान स्वरूप रूढ़िवादिता एवं विकृतियों से ग्रस्त हैं।** इन्होंने वर्णव्यवस्था का विरोध किया और बताया कि शुद्रवर्ण के सदस्यों के सामाजिक अन्याय एवं भेदभाव पूर्ण व्यवहार के लिए मुख्य रूप से चतुवर्ण की व्यवस्था करने वाली 'मनुस्मृति' जिम्मेदार है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार यह वर्ण व्यवस्था न सिर्फ अवैज्ञानिक है बल्कि अन्यायकारी भी है। **इस वर्ण व्यवस्था ने हिन्दू समाज के सदस्यों की स्थाई रूप से कैद कर उन्नति नहीं होने देती।** डॉ. अम्बेडकर भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत वर्ण व्यवस्था की कुट आलोचना करते हैं। **इनके अनुसार वर्ण व्यवस्था न सिर्फ भारतीय समाज की प्रगृति, उन्नति को अवरूद्ध करता है बल्कि समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव उत्पन्न कर सामाजिक अन्याय को भी बढ़ावा देता है।**

जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर विचार

- डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भारत में जाति व्यवस्था में दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं, पहली वर्ण और दूसरी जाति। डॉ अम्बेडकर के अनुसार जाति व्यवस्था हिन्दुओं की सामाजिक एवं धार्मिक संस्था है जिनकी जनसंख्या लगभग 80 प्रतिशत है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जाति सामाजिक स्तरीकरण का कठोरतम रूप है जिसमें रैंक तथा स्थिति की गतिशीलता सम्भव नहीं है। इस जाति व्यवस्था ने मुसलमान, ईसाई और सिक्खों को भी प्रभावित किया है जिसके कारण इन तीनों में भी जातियाँ पाई जाती हैं।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति

डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि जब जाति व्यवस्था प्रारम्भ हुआ तब यह स्थापित करना कठिन था कि जाति की उत्पत्ति कैसे हुई लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि **शासक वर्ग ने अपनी सुविधा के लिए तिनामक संस्था द्वारा सफल प्रशासन की ओर ले जाती है।** जाति व्यवस्था के उत्पत्ति या स्थापना के विभिन्न सिद्धान्त हैं। **ये धार्मिक, रहस्यमय, जैविक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक सिद्धान्त हैं।** धार्मिक सिद्धान्त के अनुसार महान पुरूश ने अपने शरीर के चार अंगों से चारों वर्णों को बनाया है, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि कैसे प्रत्येक वर्णों में अछूत स्थापित किये गए। अन्य धार्मिक सिद्धान्त भी यह दावा करता है कि दुनिया के निर्माता ने ही अपने शरीर के चार अंगों से चार वर्णों को बनाया। **इरावती कर्वे के अनुसार चार रैंक प्रणाली सत्तारूढ़वर्ग की रचना थी जिसमें मूल रूप से तीन रैंक प्रणाली थी जिनमें रैंक के मतभेद सभी लोगों को जन्म से मृत्यु तक कुछ अनुश्ठानों और संस्कारों का अधिकार था।**

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति

जैविक सिद्धान्त यह दावा करता है कि सभी मौजूदा चीजों, निमेटेड और एनिमेटेड, अन्तर्निहित तीन गुणों में अलग–अलग विभागों में होता है।

सत्व गुण, रजो गुण, तमों गुण।

सत्व गुण ब्राह्मण में, रजों गुण क्षत्रिय में एव वैश्य में तमों गुण शूद्र में शामिल है। प्राचीन भारत में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था। राजा को भगवान माना जाता था। राजा ने विभिन्न कार्यात्मक समूहों के लिए अलग स्थिति दी। **सेनर्ट ने जाति व्यवस्था की उत्पत्ति विधी सम्बन्धि भोजन के आधार पर समझाया।**

सामाजिक ऐतिहासिक सिद्धान्त

सामाजिक ऐतिहासिक सिद्धान्त के अनुसार जाति व्यवस्था भारत में आर्यों के आने के बाद शुरू हुई। **डॉ भीमराव अम्बेडकर का मानना है कि आर्यों से पहले भारत में अन्य समुदाय के लोग जैसे, मंगोलायड़, द्रविडियन और ऑस्ट्रालोइड्स रहते थे।** इनके अनुसार जब **आर्य भारत में आए तो आर्यों का सर्म्पक द्रविड़ियन और ऑस्ट्रालोइड्स के साथ हुआ।** आर्यों ने यहाँ के स्थानीय लोगों को **युद्ध में पराजित किया** साथ ही आर्यों ने भारत के **उत्तरी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित** कर लिया एवं यहाँ के मूल निवासियों को उत्तर भारत के दक्षिण में, जंगलों एवं पहाड़ों की ओर धकेल दिया। **आर्यों ने** उत्तर भारत क्षेत्र में **अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए** सबसे पहले **कार्यों के आधार पर अपने समाज को संगठित किया** और **आर्य समाज को तीन समूहों में विभक्त किया। पहला राजायण नामक योद्धा था** जो बाद में अपना नाम क्षत्रिय बदल दिया। दूसरा **समूह ब्राह्मणों का पूजारी था** और **तीसरे समूह के अन्तर्गत कारीगर एवं किसान आते थे।** आर्यों ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए कुछ सामाजिक–धार्मिक योग्यता निर्धारित की जो सिर्फ उन्हें पुजारी, योद्धा और समाज के व्यवसायी होने की इजाजत देता था।

वर्ण शब्द का अर्थ त्वचा के रंग से है वर्ग से नहीं हिन्दू धार्मिक कहानियों में अच्छे आर्यों और गहरे रंग के राक्षसों के बीच कई युद्धों की चर्चा है, लेकिन वास्तविकता यह है कि काली चमड़ी दास वास्तव में भारतीय मूल के निवासी थे जिन्हें आर्यों ने राक्षस, भौतान, राक्षसों के रूप में गढ़ा था दास। इसलिए जाति व्यवस्था अचानक नहीं आई बल्कि यह भारतीय सामाजिक विकास की एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम था। **डॉ. अम्बेडकर के अनुसार वर्तमान जाति व्यवस्था के विकास के लिए कई कारक जिम्मेदार रहे हैं:–**

- वंशानुगत व्यवसाय
- ब्राह्मणों की स्वयं को शुद्ध रखने की इच्छा
- राज्य के कठोर एवं एकात्मक नियंत्रण की कमी
- अवतारवाद एवं कर्म के सिद्धान्त में विश्वास
- भारतीय प्रायद्वीप का भौगोलिक स्थिति
- हिन्दू समाज का स्थिर प्रकृति आदि

इन कारकों के समय–समय पर छोटे अंतर के आधार पर छोटे समूहों के गठन को बढ़ावा दिया।